India

Physical Maping

Jammu & Kashmir

पर्वत

- नुब्रा
- धेजा
- शिगार

7

- Karakoram.

~~Zaskar~~ :- पार- हिमालय में अवस्थित, हिमालय से पूर्व का वलित पर्वत जहां भारत की सर्वोच्च चोटी K_2 अवस्थित है। इसमें प्राचीन Quartzite चट्टानें पायी जाती हैं। इसकी विभिन्न घाटियों में महत्त्वपूर्ण हिमनद Siachen, Hispar etc अवस्थित है।

Ladakh :- पार हिमालय में अवस्थित सर्वोच्च चोटी राखापोशी इसका पूर्वी विस्तार (तिब्बत में) कैलाश के नाम से प्रसिद्ध है।

Zaskar :- पार- हिमालय में अवस्थित जो कि महान हिमालय से संयुग्मित रूप में मिलती है। इसमें महत्त्वपूर्ण दर्रा जोजिला अवस्थित है जो कि कश्मीर घाटी को लेह - लद्दाख से जोड़ता है।

Pir Panjal :- मध्य हिमालय का पश्चिमी भाग जो कि ग्रीवाखण्ड से युक्त है। इसमें 2 महत्त्वपूर्ण दर्रे बनिहाल एवं पीरपंजाल अवस्थित है। इसके उत्तरी ढाल में घास के मैदान जिसे मर्ग कहा जाता है। Ex - गुलमर्ग

Nag tibba :- लघु हिमालय का भाग जो कि हिमांचल प्रदेश में दक्षिण पूर्व में अवस्थित है। इसका पूर्वी विस्तार उत्तराखण्ड में मसूरी Range के नाम से जाना जाता है। ग्रीवाखण्ड एवं सघन वनों से युक्त नवीन वलित पर्वत।

DHAOLA DHAR :- लघु हिमालय का भाग ग्रीवाखण्ड एवं वनों से युक्त, जहां हिमांचल के महत्वपूर्ण Hill Station Dalhousie, Shimla etc अवस्थित है।

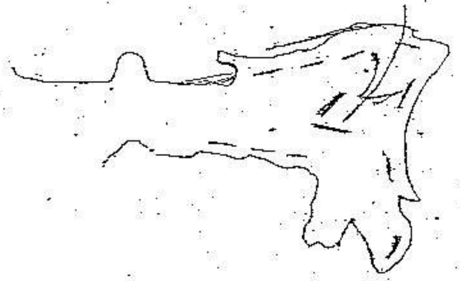

Dafla, Miri, ABOR, Mishmi Hills :- Arunanchal Pradesh में अवस्थित Shivalik का भाग जो कि $CaCO_3$ व बालुका पत्थर, shell चट्टानों से निर्मित है। इनका नाम यहां पायी जाने वाली जनजातियों के आधार पर है जो कि यहां shifting cultivation एवं fishing करती है। सघन वनों से आच्छादित है। भूस्खलन से प्रभावित है।

Patkaibum :- पूर्वांचल पहाड़ी का भाग जो कि भारत एवं म्यांमार border पर अवस्थित है। सघन वनों से युक्त है। दिहांग नदी का उद्गम स्थल यहां से एक महत्वपूर्ण दर्रा dipnu भारत को म्यांमार से जोड़ता है

Naga Hills :- पूर्वांचल पहाडी मे अवस्थित नागा बाहुल्य जनजाति, सघन वनों से युक्त , Hill top settlement (पहाडी शिखर अधिवास), shifting cultivation, सर्वोच्च चोटी सारामती है।

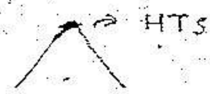

Manipur Hill :- पूर्वांचल का भाग जहां महत्त्वपूर्ण झील Loktak पायी जाती है। यह झील विश्व प्रसिद्ध floating park के लिए जानी जाती है। यह एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्यान भी है।

Mizo Hills :- पूर्वांचल का भाग जिसे लुसाई नाम से भी जाना जाता है। यह सघन बांस के वनों से भी आच्छादित है।

* पूर्वांचल पहाडियाँ भारत एवं म्यांमार की एक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक - राजनैतिक विभाजक सीमा है।

Garo , Khasi , Jaintia Hills :- शिलांग पठार का एक भाग जो कि प्राचीन धारवाड़ चट्टानों से निर्मित है। यह विभिन्न जनजातियों के निवास स्थल है। इस पठार की सर्वोच्च चोटी नोक्रेक गारो पहाडी पर अवस्थित है। Khasi एक कीपनुमा पहाडी है जो कि मानसूनी पवनों को Trap करती है। फलतः विश्व का सर्वाधिक ~~मिस्क~~ वर्षा वाला स्थान मासिनराम इसके गिरिपाद पर अवस्थित है। यह संपूर्ण भाग उत्तरी भाग पर scarp land की भांति दिखता है।
नदियां किसी तट को काटकर खडा करदे।

इस पठार का पूर्वी विस्तार MIKIR एवं RENGMA पहाडी के नाम से जाना जाता है। यह संपूर्ण पठार सुपाड़ी, बांस एवं चीड का महत्त्वपूर्ण उत्पादक है।

प्रायद्वीपीय पठार की पहाड़ियाँ

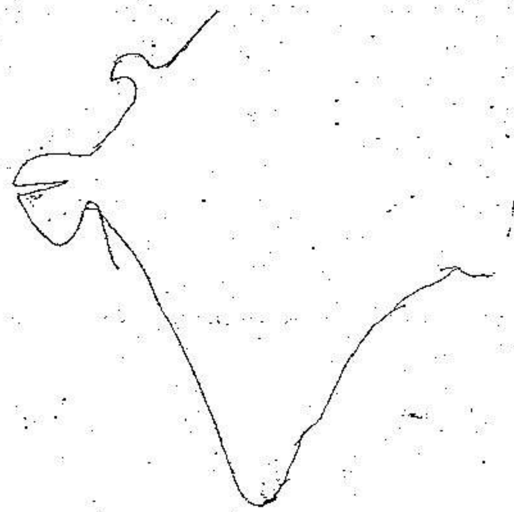

Rajmahal :- छोटा नागपुर पठार के उत्तरपूर्वी भाग में अवस्थित —Basaltic लावा निक्षेप से युक्त जो कि दक्कन पूर्व लावा है। इसकी सर्वोच्च चोटी पारसनाथ है। इनके आधार में Quartzite चट्टानें भी पायी जाती हैं।

गरजत पहाड़ी :- छोटा नागपुर के दक्षिण में अवस्थित लौह अयस्क से सम्पन्न धारवाड़ युगीन चट्टानों से युक्त जिसमें उड़ीसा के दो जिले सुंदरगढ़ एवं मयूरभंज

रामगढ़ पहाड़ी :- CNP के पश्चिम में अवस्थित CG के अंबिकापुर तक विस्तृत जो कि कई नदियों का स्रोत Ex - मांद, ईब etc. सघन वनों से युक्त।

विन्ध्यन पहाड़ी :- विन्ध्यन काल में निर्मित बालुका पत्थर चूना पत्थर एवं shell से युक्त जिसमें महत्त्वपूर्ण Kimberley चट्टान भी पायी जाती है। मारवाड़ पठार से लेकर सोनपार पहाड़ी तक। इसका दक्षिणी भाग नर्मदा के कटाव के कारण scarpland की भाँति दिखता है। इसके उत्तरी भाग को Fall line of India के नाम से

माना जाता है। यह एक महत्त्वपूर्ण जलविभाजक है।

कैमूर पहाड़ी :- विन्ध्य का एक भाग $CaCO_3$ से संपन्न सोन एवं टोन्स नदियों के मध्य अवस्थित।

भांडेर एवं पन्ना पहाड़ियाँ :- केन एवं टोन्स के मध्य अवस्थित विन्ध्यन का एक भाग, भांडेर मे $CaCO_3$ एवं dolamite तथा पन्ना में Kimberley चट्टान। पन्ना पहाड़ी में महत्त्वपूर्ण Panna National Park एवं Tiger Reserve अवस्थित है।

सतपुड़ा पहाड़ियाँ :- नर्मदा एवं तापी के मध्य अवस्थित Block mountain के सदृश्य 7 पहाड़ियों का समूह जिसकी सर्वोच्च चोटी धूपगढ़। इसे भिन्न-2 नामों से ex-

a) अमरकंटक :- मैकाल पहाड़ी पर अवस्थित महत्त्वपूर्ण Hill station महत्त्वपूर्ण Biosphere Reserves अचानकमार अवस्थित है। मैकाल पहाड़ी अरीय अपवाह का उदाहरण है।

b) महादेव पहाड़ी :- सतपुड़ा का एक भाग जहां सर्वोच्च चोटी धूपगढ़ एवं महत्त्वपूर्ण Hill station पचमढ़ी अवस्थित है। सघन सागौन एवं शाल के वनों से युक्त।

c) राजपीपला एवं गाबिलगढ़ :- सतपुड़ा का पश्चिमी भाग साल वनों से युक्त भील एवं कोरकू जनजातियों का अधिवास क्षेत्र है। इन दोनों के मध्य महत्त्वपूर्ण दर्रा खण्डवा gap अवस्थित है जिससे NH3 एवं महत्त्वपूर्ण Railway line जो कि उत्तर भारत को दक्षिण से जोड़ती है।

गिर एवं गिरिनार पहाड़ी :- काठियावाड़ प्रायद्वीप में अवस्थित lime stone से संपन्न सघन वनों से युक्त जो कि Asiatic ~~loin~~ lion की महत्त्वपूर्ण शरणस्थली है। गोरखनाथ सर्वोच्च चोटी है जो कि जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थस्थल भी है।

माना जाता है। यह एक महत्त्वपूर्ण जलविभाजक है।

कैमूर पहाडी :- विन्ध्य का एक भाग $CaCO_3$ से संपन्न सोन एवं टोन्स नदियों के मध्य अवस्थित।

भांडेर एवं पन्ना पहाडियाँ :- केन एवं टोन्स के मध्य अवस्थित विन्ध्यन का एक भाग, भांडेर मे $CaCO_3$ एवं dolamite तथा पन्ना में Kimberley चट्टान। पन्ना पहाडी में महत्त्वपूर्ण Panna National Park एवं Tiger Reserve अवस्थित है।

सतपुडा पहाडियाँ :- नर्मदा एवं तापी के मध्य अवस्थित Block mountain के सदृश्य 7 पहाडियों का समूह जिसकी सर्वोच्च चोटी धूपगढ़। इसे भिन्न-2 नामों से ex-

a) अमरकंटक :- मैकाल पहाडी पर अवस्थित महत्त्वपूर्ण Hill station महत्त्वपूर्ण Biosphere Reserves अचानकमार अवस्थित है। मैकाल पहाडी अरीय अपवाह का उदाहरण है।

b) महादेव पहाडी :- सतपुडा का एक भाग जहां सर्वोच्च चोटी धूपगढ़ एवं महत्त्वपूर्ण Hill station पचमढ़ी अवस्थित है। सघन सागौन एवं शाल के वनों से युक्त।

c) राजपीपला एवं गाबिलगढ़ :- सतपुडा का पश्चिमी भाग साल वनों से युक्त भील एवं कोरकू जनजातियों का अधिवास क्षेत्र है। इन दोनों के मध्य महत्त्वपूर्ण दर्रा खण्डवा gap अवस्थित है जिससे NH3 एवं महत्त्वपूर्ण Railway line जो कि उत्तर भारत को दक्षिण से जोडती है।

गिर एवं गिरनार पहाडी :- काठियावाड प्रायद्वीप में अवस्थित lime stone से संपन्न सघन वनों से युक्त जो कि Asiatic ~~loin~~ lion की महत्वपूर्ण शरणस्थली है। गोरखनाथ सर्वोच्च चोटी है जो कि जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थस्थल भी है।

यहां महत्त्वपूर्ण नगर जूनागढ अवस्थित है।

माण्डवी पहाडी :- काठियावाड प्रायद्वीप में अवस्थित $CaCO_3$ निक्षेप से युक्त जहां महत्त्वपूर्ण नगर राजकोट

अजन्ता, सतमाला एवं हरिश्चन्द्र पहाडियाँ :- दक्कन पठार में अवस्थित विभिन्न नदियों के अपरदन के परिणामस्वरूप कटक नुमा संरचना

नालकोण्डा :- पूर्वी घाट का एक भाग जो खोण्डेलाइट चट्टानों से निर्मित सघन वन से युक्त चापीय आकृति जिसमें महत्वपू राष्ट्रीय उद्यान श्रीशैलम अवस्थित है। कृष्णा एवं पेन्नेरु के मध्य अवस्थित

पालकोण्डा :- पूर्वी घाट की एक पहाडी जो पेन्नेरु एवं Kalar नदियों के मध्य अवस्थित है। सघन वनों से युक्त है। शेषाचलम biosphere reserve.

जवादी एवं शिवराय :- TN में अवस्थित पूर्वी घाट का दक्षिणी प्रक्षेप लौह अयस्क से सम्पन्न।

नीलगिरि :- पूर्वी एवं पश्चिमी घाट का संकुल केन्द्र कॉफी, चाय एवं रबर उत्पादन के लिए प्रसिद्ध, महत्त्वपूर्ण Biosphere Reserve सर्वोच्च चोटी dodabeta है।

~~पालनी~~
अन्नामलाई :- पश्चिमी घाट का एक भाग TN एवं केरल के मध्य अवस्थित गरम मसाले एवं चाय के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध। दक्षिण भारत की सर्वोच्च चोटी अनाईमुडी। पालघाट द्वारा नीलगिरि से पृथक।

पालनी :- दक्षिणी पहाडी संकुल की अनुप्रस्थ पहाडी TN में अवस्थित चाय, कॉफी रबर के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध कोडईकनाल महत्त्वपूर्ण Hill station

Cardamom Hills :- पश्चिमी घाट की दक्षिणतम पहाड़ी Kerala तथा TN के मध्य अवस्थित गरम मसाले एवं इलायची के लिए प्रसिद्ध। सर्वोच्च चोटी महेन्द्रगिरि। इसके मध्य में सिनकोट्टा (शेनकोट्टा) gap अवस्थित है।

* महत्त्वपूर्ण जलवायविक अवरोधक (western ghat)

दर्रे

पालघाट :- अन्नामलाई एवं नीलगिरि के मध्य कोयम्बटूर एवं कोच्चि को जोड़ने वाला, NH-47 इस दर्रे से होकर दक्षिण पश्चिम मानसूनी पवनें TN में प्रवेश करती हैं।

शेनकोट्टा :- इलायची पहाड़ी पर अवस्थित जो कि तिरुवनन्तपुरम को मदुरई से जोड़ता है। दक्षिण पश्चिम मानसूनी पवनें TN में प्रवेश करती हैं।

थालघाट :- मुंबई को नासिक से जोड़ने वाला दर्रा जिससे महत्त्वपूर्ण NH एवं Railway line गुजरती है। (सह्याद्रि)

भोरघाट :- सह्याद्रि में अवस्थित मुंबई को पुणे से जोड़ने वाला दर्रा जिससे महत्त्वपूर्ण NH-4 गुजरता है।

अरावली (लक्षद्वीप से गढ़वाल) :- विश्व का प्राचीनतम वलित पर्वत जो कि Precambrian युगीन है। अलौह धात्विक खनिजों से संपन्न है। सर्वोच्च चोटी माउण्ट आबू पर अवस्थित गुरुशिखर है।

जरगा एवं हर्षनाद इसके महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं।

माउण्ट आबू :- अरावली के दक्षिण में अवस्थित महत्त्वपूर्ण Hill station. जहां अरावली की सर्वोच्च चोटी गुरु शिखर हिन्दुओं एवं जैनियों का पवित्र स्थल।

Trans-himalaya के दर्रे :

a) जोजिला :- Zaskar range में अवस्थित जो कि कश्मीर घाटी को लद्दाख क्षेत्र से जोड़ता है।

b) बुर्जिला :- Greater himalaya में अवस्थित जो कि कश्मीर घाटी को POK के गिलगिट क्षेत्र को जोड़ता है।

Himalaya के दर्रे :-

बनिहाल दर्रा :- पीरपंजाल Range पर अवस्थित महत्वपूर्ण दर्रा जो कि Jammu को Kashmir घाटी से प्रसिद्ध Jawahar tunnel के साथ जोड़ता है। (NH - 1A)

पीरपंजाल दर्रा :- पीर पंजाल के उच्चवर्ती भाग पर अवस्थित जो कि राजौरी को पुंछ से जोड़ता है।

बारा लाचा :- बृहद हिमालय में अवस्थित जो कि Kullu घाटी को लेह से जोड़ता है। शीतकाल में हिमाच्छादन के कारण बंद। चेनाब नदी का उद्गम केन्द्र

शिपकी ला :- महान हिमालय में अवस्थित संकीर्ण दर्रा जो कि हिमाचल प्रदेश (स्पीति घाटी) को तिब्बत से जोड़ता है। सतलुज नदी इसी दर्रे से प्रवेश करती है।

रोहतांग दर्रा :- स्पीति घाटी में अवस्थित महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है।

लिपुलेख ला :- कुमायूं क्षेत्र के महान हिमालय में अवस्थित जो कि तिब्बत को उत्तराखण्ड से जोड़ता है। यह मार्ग मानसरोवर एवं कैलाश यात्रियों द्वारा प्रमुखता से उपयोग में लाया जाता है। इसका सामरिक महत्त्व भी है।

नाथुला :- चुम्बी घाटी के समीप सिक्किम में अवस्थित महत्वपूर्ण दर्रा जिसमें से चीन के साथ व्यापार जिसका सामरिक महत्व भी है।

जलेप ला :- चुम्बी घाटी के समीप सिक्किम में अवस्थित जो कि तिब्बत को गंगटोक से जोड़ता है वर्तमान में यह बंद कर दिया है।

Bum La :- तवांग को ल्हासा से जोड़ने वाला, सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण

Diphu Pass :- इस दर्रे के समीप तिब्बत भारत एवं म्यांमार तीनों की सीमा अतः सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण

Tuju Pass :- मणिपुर के पूर्वांचल पहाड़ी में अवस्थित जिससे होकर मोरेह एवं तामू राजमार्ग का विकास किया जा रहा है।

हिमानी

15

AKHILESH KUMAR PATHAK

आखिलेश कुमार पाठक

Geography

भूगोल

THE BOOK SHOP
Shop No.- A-35/36, Dhundari Market
Dr. Mukherjee Nagar Delhi-09
Phone : 011-2765[illegible]

01/09/2012

भारत में उद्योगों का विकास :-

Introduction :- प्राचीन भारत में औद्योगिक विकास यूरोप की तुलना में कतिपय अधिक श्रेष्ठ माना गया है। ढाका का मलमल एवं कोच्चि का Chintez एवं महरौली का Iron - Pillar, प्राचीन भारत के प्रसंस्करण एवं तन्तुकीकरण उद्योग के प्रमाण हैं। विदेशी यात्रियों के विवरण में भारत के हस्त शिल्प का अद्भुत उदाहरण मिलता है। रोम के विदेशी यात्री ने लिखा है कि ~~मामी~~ राजकुमारी भारतीय मलमल में ढँकी हुई भी नग्न दिख रही थी। यह fine wieving quality का अद्भुत उदाहरण है।

भारत में आधुनिक औद्योगिकीकरण के निम्नांकित चरण हैं :-

① Abortive Phase (1818 – 1853) :- कई उद्योग स्थापित हुए परन्तु असफल।

1818 – ~~Fount Gloster~~ Fort ~~Sloster~~ /Gloster

1827 – Iron - smelting, chennai

1831 – Ahmadabad textile

1837 – Ranigauj iron smelting

कारण – ① ब्रिटिश नीतियाँ

② निर्यात पर उच्च Tariff

③ भारतीय बाजार में मांग की कमी

④ मशीनीकरण का अभाव

⑤ विदेशी आयातित वस्तुओं की तुलना में अधिक मूल्य

② **Early Expanding Phase (1854-1908)**

1853 - Mumbai - Thane Railway एवं महाराष्ट्र में cotton क्षेत्रो का mumbai से जुड़ाव

1854 - देवार जी के द्वारा Bombay Textile mill की स्थापना

1855 - Jute textile - Rishra

1861 - Ahmadabad Textile mill

1864 - Ranigang Iron smelting → ये विफल हो गया

1878 - लाल इमली - ऊनी वस्त्र के लिए. ~~सांभर के उत्पादन~~

19 वीं शताब्दी के अंत में ~~कुल~~ 66 Jute textile व 111 cotton textile mill स्थापित हो चुके थे। Agro based industry का सर्वाधिक विकास क्योंकि भारत में जनसंख्या विस्फोट, यूरोप मे निर्यात में वृद्धि, भारत में मांग में वृद्धि।

③ **1908 - 1956** :- यह उत्तर विस्तार काल है जिसमें आधुनिक मशीन उद्योग, लौह इस्पात, उर्वरक, वायुयान जैसे उद्योग स्थापित हुए।

1908 - Tisco साकची ग्राम की स्थापना। आधुनिक औद्योगिकीकरण का पहला कदम है।

1919 - IISCO

1923 - विश्वेश्वरैया Iron steel Ltd (VISL)

Fischer commission 1930 के दशक में अन्य आधुनिक उद्योगों की स्थापना का

प्रस्ताव दिया।

National movement में मांग एवं Bengal famine की स्थिति ने नवीन उद्योगों की मांग बढ़ा दी। Bangalore में Aeronautics company एवं Fertilizer industry Nangal (Punjab).

Mahalanobis

(4) 1956 - 1991 : यह socialistic pattern of Economy (समाजवादी प्रतिरूप पर आधारित) औद्योगिकीकरण था जिसमें Public एवं Private sector दोनों के सहयोगिता का उद्देश्य था।

→ Nehru का Mahalnobis द्वारा पिछड़े क्षेत्रो के विकास हेतु औद्योगिकीकरण प्रस्तावित किया गया।

1956 के औद्योगिक नीति को भारत का आर्थिक संविधान (Economic constitution of India) कहते है। इसके अंतर्गत 1959 में भिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला की स्थापना द्वितीय पंचवर्षीय योजना में की गई।

तृतीय पंचवर्षीय योजना में Heavy electrical - Bhopal, Heavy Engg - Ranchi

Pharma - हरिद्वार

Fertiliser - सिंदरी, नांगल

Oil Refining - बरौनी

Hindustan Machine tool की स्थापना - Srinagar, पिंजौर, Ajmer, Bengaluru, Hydrabad, अल्वई।

1974 Bokaro steel Plant

6th पंचवर्षीय योजना में Iron steel - Vijayanagram (1982)

Salem - Iron steel Ind.

7th Plan में कृषि को पुनः बल दिया गया तथा क्षेत्रीय विषमता को दूर करने का प्रयास किया गया।

(5) **1991 – वर्तमान** :- नई औद्योगिक नीति 1991 Liberalisation, Globalisation, Open market Economy लागू की ये 5 D पर आधारित था -

D – Disinvestment (विनिवेश)
D – Decentralisation (विकेन्द्रीकरण)
D – Diversification (विविधतापूर्ण)
D – Deregulation (विनियमीकरण)
D – Delicensing – (विलाइसेंसीकरण)

Foreign exchange regulatory Act ↓ Management

- **FERA to FEMA Regime** :- Govt. Regulatory role छोड़कर Management में चली गई ।

- Current account convertibility :- (चालू खाता परिवर्तनीय)
- Partial capital a/c convertibility (आंशिक पूँजी खाता परिवर्तनीयता)

11th Plan में Inclusive growth है। इसमें कृषि, सेवा, उद्योग सभी क्षेत्रों को साथ लेकर चलना ।

- संपोषणीय विकास
- Evergreen Development (सदाहरित विकास)
- Community development (सामुदायिक विकास)
- Regional development (क्षेत्रीय विकास)

Iron - steel Industry of India

प्र० लौह इस्पात की अवस्थिति एवं विकास के चरणों को सकारण विश्लेषित तथा नयी प्रवृत्तियों को दर्शाये।

लौह इस्पात एक आधारभूत एवं भारी उद्योग है जिस पर औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण आधारित होते है। ये आर्थिक वृद्धि का सूचकांक है जो देश के आर्थिक दशा को दर्शाता है।

लौह इस्पात एक प्रणोदक उद्योग है जो समूहन प्रभाव उत्पन्न करता है तथा बडी संख्या में रोजगार उत्पन्न करता है। लौह- इस्पात एक कच्चा माल आधारित उद्योग है जो weight loosing industry होने के कारण लौह अयस्क एवं कोयले के क्षेत्रों में अवस्थित होता है।

भारत में लौह इस्पात उद्योग का विकास एवं अवस्थिति की परिस्थितियाँ

Tisco - (1908):- 1911 में Production start (साक्ची ग्राम (Sakchi) जो स्वर्णरेखा एवं खारकायी (Kharkai) नदी के संगम में अवस्थित था। कोयला झरिया से (117 km) एवं लौह अयस्क नोवामुण्डी से जो 134 km पर अवस्थित है। $CaCO_3$ - पलामू, कोलकाता - बंदरगाह के रूप में, मुंबई - कोलकाता - दिल्ली रेलमार्ग से संयुक्त तथा Mn - सुन्दरगढ़ से प्राप्त करता है। सस्ता श्रम - Locally available. यह अवस्थिति weber के model को follow करता है।

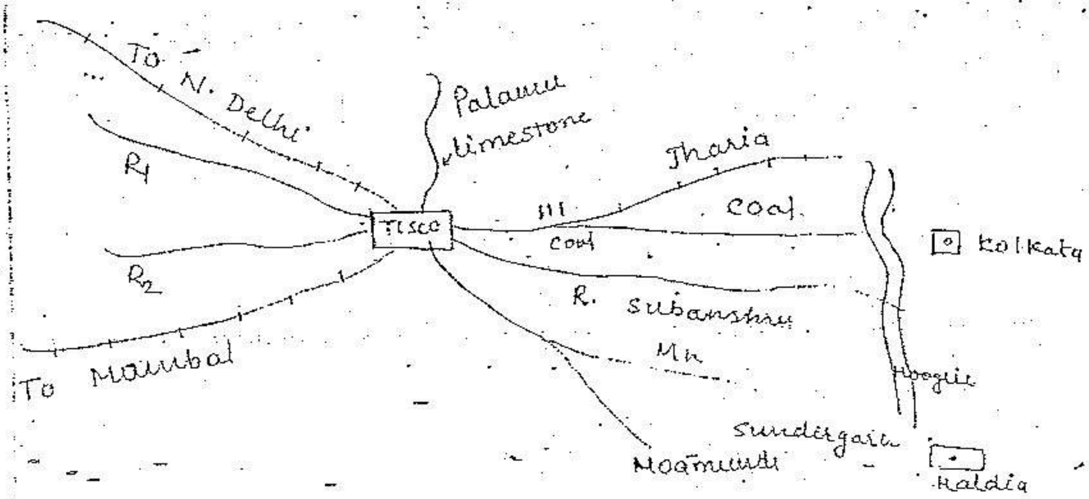

कच्चे माल पर आधारित है। दोनो कच्चे माल लौह अयस्क एवं कोयले की मध्यवस्था में अवस्थित है

– TISCO (1919):- इसके अंतर्गत 3 केन्द्र है -

हीरापुर, कुल्टी, वर्णपुर

यह Raniganj coal पर आधारित, लौह अयस्क - मयूरभंज

Mn & $CaCO_3$ - सुंदरगढ़, कोलकाता - बंदरगाह एवं बाजार,

– *DVC के द्वारा जल विद्युत
(Damodar Valley corporation)

विश्वेश्वरैया (VISL) 1923 :- यह लौह अयस्क पर आधारित है। भद्रावती* कर्नाटक → भद्रावती

बेल्लारी, चित्रदुर्ग, चिकमंगलूर से लौह अयस्क,

Mn - Locally available

जंगल से charcoal पर आधारित था

, परन्तु अब Korba से कोयला प्राप्त करता है।

1959 ← **Bhilai :-** USSR की मदद से, Korba से coal, डल्लीराजहरा से Fe ore प्राप्त होता है। यह Fe व coal दोनों पर आधारित अवस्थिति है।

राउरकेला :- पश्चिम जर्मनी की मदद से
तालचेर से coal व Fe - मयूरभंज से, क्योंझर से। यह Fe व coal दोनो पर आधारित अवस्थिति है।

दुर्गापुर :- UK की मदद से, Raniganj coal पर आधारित

(1974)
Bokaro :- Russia की मदद से, आधुनिक Plant सर्वाधिक capacity, कोयले पर आधारित अवस्थिति है।
Eastern व Western Bokaro field में coal.

Salem Iron steel Industry :- बाजार आधारित उद्योग-
दक्षिणी भारत के विशाल मांग की आपूर्ति के उद्देश्य से । ये scrap iron के पर आधारित है। ये siderite समीपवर्ती लौह अयस्क का भी प्रयोग करता है।

Siderite - सिडेराइट Fe

Vijayanagar Plant :- यह Fe ore पर आधारित. कुद्रेमुख mine के पास।

1992 के बाद भारत में लौह इस्पात की अवस्थिति की नवीन प्रवृत्तियाँ देखी गई हैं -

1) Port location
2) बाजार उन्मुखता
3) निर्यात उन्मुखता

* विशाखापट्टनम (1992) :- Port आधारित, निर्यात के उद्देश्य से, सर्वाधिक आधुनिक.

Australia से Metallurgical coal एवं बैलाडिला से लोहा, $CaCO_3$ - locally available

यह भारत का प्रथम लौह इस्पात उद्योग है जो कच्चे माल से दूरस्थ स्थित हुआ।

कलिंगनगरम् : तटीय अवस्थिति, उडीसा → Tisco बना रहा.

Posco Industry :- पारादीप के पास तटीय अवस्थिति → S. Korea के द्वारा

गोपालपुर :- Tisco द्वारा. तटीय अवस्थिति

Tolgiri :- रत्नागिरि, महाराष्ट्र, पश्चिमोत्तर भारत के बाजार आधारित, तटीय अवस्थिति

इस प्रकार भारत मे ISI को 2 चरणो में रखा जा सकता है

(1) 1908 - 1982 - जब 3 प्रकार की अवस्थिति दिखती है

(a) Coal based

(b) Fe ore based

(c) C - Fe ore की मध्यावस्था

इस Phase मैं प्रथम ~~Pado~~ Paradigm का उपयोग किया गया है।

(2) 2nd phase :- तटीय अवस्थिति, बाजार उन्मुखता

~~*~~ यह औद्योगिक प्रगति smith के model को follow करती है जिसमें अधिक Revenue की प्राप्ति के लिए मांग एवं मूल्य को परिवर्तनशील माना गया है।

औद्योगिक प्रदेश v/s संकुल

औद्योगिक प्रदेश	संकुल
(i) औद्योगिक प्रदेश में उद्योगों का क्षेत्रीय /स्थानिक विश्लेषण है।	(i) संकुल प्रकार्यात्मक विश्लेषण है जिसमें उत्पादन लागत निवेश का अध्ययन किया जाता है।
(2) उद्योगो का वैविध्यीकरण होता है।	(2) एक प्रमुख उद्योग एवं सहायक उद्योग होते हैं। विविधता कम होती है।
(3) समूहन प्रभाव दिखता है अर्थात 3 से अधिक भारी एवं आधारभूत उद्योग सम्मिलित होते है तथा उनके पोषक उद्योग सहजीवी उद्योग, एरक उद्योग, सहायक उद्योग का संजाल प्राप्त होता है।	(3) संचयी प्रभाव दिखता है इसमें 1 अथवा 2 वृहद उद्योग अथवा आधारित उद्योग होते हैं। संजाल लघु होते हैं।

(4) अपकेन्द्रीय बलों के परिचायक है एवं उद्योगों के बाह्य विस्तार के सूचक

(4) उद्योगों में केन्द्रीकरण / अभिकेन्द्रीय बल दिखता है तथा Land, Labour, capital etc का केन्द्रीयता होता है।

(5) यह वृहद संकल्पना है।
Ex- CNP एक औद्योगिक प्रदेश है।

(5) संकुल उसके घटक अथवा उपसमुच्चय होते हैं।

Ex- Hugli औद्योगिक क्षेत्र

औद्योगिक प्रदेश का निर्माण :-

औद्योगिक प्रदेश की उत्पत्ति के भौगोलिक कारक -

a) Natural Advantage :- Ex- भौगोलिक अवस्थिति, सुगम्यता, कच्चे माल की प्राप्ति ये सभी किसी क्षेत्र को प्राथमिक लाभ देता है।

Ex- CNP, Hugli नदी, मुंबई की तटीय अवस्थिति

b) Comparitive Advantage :- परिवहन मार्ग का होना, बेहतर जलवायु, सस्ते श्रम, Natural Resource etc. दो प्राकृतिक प्रदेशों में प्राकृतिक लाभ होने पर भी तुलनात्मक लाभ उत्पन्न करता है।

Ex- TISCO

c) Acquired Adv :- प्रथम उद्योगों की स्थापना एवं उसके अधिसंरचनात्मक विकास से जो लाभ प्राप्त होता है।

Ex. TISCO के बनने से CNP में औद्योगिकीकरण की प्रवृत्तियाँ।

d) सैचयी

Cumulative Adv. :- जब एक या २ भारी एवं आधारभूत उद्योग आधिसंरचना के साथ-२ अपने सहायक उद्योगों को विकसित कर लेते हैं।

Ex. Jamshedpur के बाद Bokaro, Ranchi की स्थापना

e) समूहन

Agglomerative Adv :- जब 3 से अधिक वृहद उद्योग एवं उनके अग्रगामी - पश्चगामी उद्योग विकसित हो तथा आधिसंरचना का वृहद विकास। इसमें उद्योगों का विविधीकरण, विकेन्द्रीकरण होता है जो औद्योगिक प्रदेशों के निर्माण का कारण है।

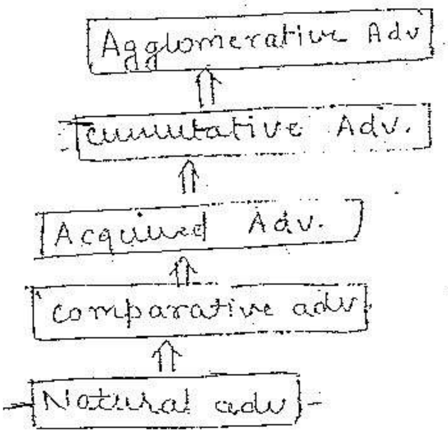

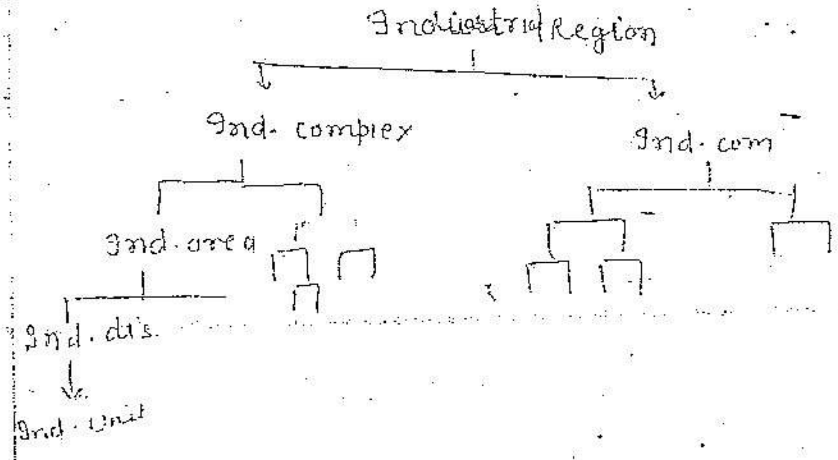

· R.P. Sinha ने 1991 census के आधार पर 3 वर्ग बाँटे

a) औद्योगिक प्रदेश: जहाँ 1.5 lakh से अधिक Labour employment है जो कम से कम 180 दिनों तक प्रतिदिन 8 घण्टे काम करते है

b) औद्योगिक संकुल:- जहाँ 25,000 से 1.5 lakh labour employ.
- इसे minor ind. region भी कहा गया

c) Ind. district - जहाँ 25,000 से कम Labour emp.

भारत में 8 वृहद औद्योगिक प्रदेश है एवं 19 minor -

① Hoogli Ind. Reg.
② Chota Nagpur
③ Delhi - Merut
④ Ahmadabad - Badodra
⑤ Mumbai - Pune - Nasik Δ
⑥ Trivandrum - Kollam
⑦ Coimbature - Madurai
⑧ Vishakhapatnum - Guntour.

औद्योगिक प्रदेशो के अवस्थिति का सकारण वर्णन

Hoogli Industrial Region :- Fort William की स्थापना से कलकत्ता महानगर बना।

यह प्राकृतिक लाभ ex - आर्द्र जलवायु, हुगली का जल, Jute उत्पादन क्षेत्र, सस्ते श्रम, रानीगंज का कोयला एवं Ferry boat system (वितरिकाओं के कारण)

Chota Nagpur के जंगल, असम forest सुन्दरवन के मध्यवर्ती क्षेत्र है। अतः वन आधारित उद्योग, माचिस उद्योग, बीडी उद्योग, कागज - लुग्दी उद्योगो की स्थापना हुआ परंतु रिशरा (1855) में जूट Textile की स्थापना के साथ ये औद्योगिक प्रदेश विकसित हुआ!

IR = Industrial Region

औद्योगिक प्रदेश

ISI = Iron-Steel Ind.

लौह इस्पात उद्योग

DVC से जल विद्युत एवं ISI की स्थापना Ex- IISCO दुर्गापुर से लाभान्वित हुआ।

यह IR नैहाटी से हल्दिया तक फैला हुआ है।

मुख्य उद्योग - जूट (हावड़ा, बजबज, सेरामपुर, बेलागंज, ~~etc~~ बेलूर नैहाटी)

cotton textile - हावड़ा

Leather Ind. - हावड़ा

Petrochemical - हल्दिया एवं कोलकत्ता

जहाजरानी - Garden Reef कोलकाता

कागज एवं लुग्दी उद्योग - सेरामपुर, बेलागंज, टीटागढ़

Pharmaceutical - कोलकाता

नये बंदरगाह हल्दिया की स्थापना तथा Petroleum Pipeline बरौनी से हल्दिया तक स्थापित किया गया।

Railway wagon - Etanagar

यह औद्योगिक प्रदेश Employment के आधार पर भारत का सबसे बड़ा औद्योगिक प्रदेश है तथा इसके प्रारंभिक लाभ खत्म हो चुके है

Ex - कोलकाता बंदरगाह का बंद होना

- भारत की राजधानी के रूप में 1911 में खत्म होना
- पूर्वी पाकिस्तान के बंटने से 90% जूट उत्पादक क्षेत्र का बंट जाना। इसके बावजूद यह एक प्रमुख औद्योगिक प्रदेश है क्योंकि यहां समूहन प्रभाव, capital immobility एवं आधिसंरचनात्मक विकास स्थापित हो चुके हैं। इसे Geographical inertia कहते हैं।

⇒ India Map with location of ISI.

02/09/2012

राज्य (State)

- क्षेत्र
- जनसंख्या
- सरकार
- संप्रभुता → आंतरिक / → बाह्य

- International Recognition → State / → International organisation

राज्य (साधन) → साध्य (End) → जन कल्याण

कार्य - आवश्यक ↓ विधि व्यवस्था   - वैकल्पिक

Socialism - Evolutionary
Gandhian
Democratic
Fabian

Communism - Reactionary socialism.

उदारवाद

पूंजीवाद - ex ← Individualism → ↓ Initial liberalism ↓ Laissez faire सिद्धान्त ↓ Non interference

Welfarism ↓ Later Liberalism ↓ लोक कल्याण (साध्य) ↓ लोक कल्याणकारी राज्य

उदारवाद → सामाजिक क्षेत्र में → धर्मनिरपेक्षता
→ आर्थिक क्षेत्र में → मुक्त व्यापार
→ राजनैतिक क्षेत्र में → स्वतंत्रता

भारत में उद्योगों का क्रम विकास :- स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय उद्योग महज लघु उद्योगों तक ही सीमित था। अधिकांश कच्चे पदार्थ भारत से निर्यात किये जाते थे तथा भारत तैयार उत्पाद विदेशों से आयात करता था। 18वीं - 19वीं सदी के यूरोपीय औद्योगिक क्रांति के समय ब्रिटेन की सरकार ने बाजार की मांग को देखते हुए उपनिवेशों में अपना नियंत्रण मजबूत कर दिया। भारत इस दौरान मात्र कुछ ही उत्पाद ex - मलमल, मिट्टी के बर्तन, सजावटी सामग्री etc ही निर्यात करता था। भारत ने - - - - - -

THE BOOK SHOP
Shop No.- A-35/36, Bhandari House
Dr. Mukherjee Nagar Delhi-09
Phone: 011-27658406

भारत की औद्योगिक नीति-

भारतीय सरकार ने पहली औद्योगिक नीति की घोषणा 6 Apr. 1948 में की जिसके तहत भारत में एक मिश्रित अर्थव्यवस्था कायम किया जाना था जहां सरकारी एवं निजी उद्यम साथ-2 कार्य कर सके। इस नीति के अंतर्गत भारतीय उद्योगों को 4 तरीके से वर्गीकृत किया गया।

a) ऐसे उद्योग जिन पर राज्य का एकाधिकार हो - इसके अंतर्गत हथियार तथा गोला - बारूद के उद्योग, परमाणु ऊर्जा संयंत्र, Railway etc थे।

b) नये इकाइयों पर राज्य का एकाधिकार :- इसके अंतर्गत कोयला, लोहा एवं इस्पात, जहाजरानी, टेलीफोन etc उद्योग आते थे। इन क्षेत्रों में कोई भी नये संयंत्र राज्य द्वारा

ही लगाये जाने थी।

राज्य विनियमित उद्योग – इसके अंतर्गत रसायन, उर्वरक, रबर, सीमेन्ट, न्यूजप्रिंट, इलेक्ट्रानिक etc उद्योग आते है। जिन उद्योगों को राज्य अपने कानूनों के अंतर्गत विनियमित कर सकते है।

अविनियमित निजी उद्योग :- शेष सारे उद्योग जिनकी चर्चा ऊपर नही की गई है। इसके अंतर्गत आते है जिन्हे सरकार विनियमित नही करते है।

Monopolies And Restrictive practices Act, 1970
एकाधिकार एवं प्रतिबन्धित व्यवसाय अधिनियम, 1970
स्वतंत्रता से पूर्व निजी अर्थव्यवस्थाओं को नियंत्रित करने की एक प्रवृत्ति थी जिसमें Management agencies शामिल थे, कि इन अर्थव्यवस्थाओं को नियंत्रित करने में सबसे प्रमुख हथियार इन एजेंसियों के पास लंदन पूँजी बाजार पर नियंत्रण तथा आसान पहुँच।

Ex- Hindusa

भारतीय सरकार ने 1947 के बाद इन प्रबंधन एजेंसियों पर प्रहार करना शुरु किया तथा इस अधिनियम के अंतर्गत उन्हें समाप्त कर दिया।

Hazari Committee Report 1967 : औद्योगिक licensing से संबंधित यह.

Report यह सुझाव देता है कि भारत में व्यावसायीकरण का वितरण इस तरह से होना चाहिए जिसके अंतर्गत क्षेत्रीय असमानता किसी भी रूप में नहीं पनपें।

Sengupta comittee Report 1985 :- इस समिति द्वारा यह सुझाव दिया गया कि सरकारी उद्यमों को आंशिक रुप से स्वायत्तता दी जाये लेकिन इसके एवज में सरकार के प्रति वो उत्तरदायी रहे। देखा जाये तो उदारीकरण के प्रारंभ के संकेत इस Report में देखने को मिलते हैं।

नई औद्योगिक नीति 1991 :- भारतीय औद्योगिक नीति में एक बड़ा परिवर्तन नरसिंहा राव सरकार के कार्यकाल के दौरान किया गया तथा इस औद्योगिक नीति का मुख्य उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था में नौकरशाही नियंत्रण को कम करना था। इसके अंतर्गत उदारीकरण के द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था को अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से जोडना भी एक उद्देश्य था। इस औद्योगिक नीति की मुख्य विशेषताएँ नि. लि. हैं :-

(1) मात्र कुछ उद्योगो को छोडकर Ex- परमाणु ऊर्जा, कोयला, Railway, परमाणु खनिज etc. औद्योगिक लाइसेंसिंग समाप्त कर दी गई। अधिक प्राथमिकता वाले क्षेत्र में विदेशी निवेश अधिक से अधिक 51% कर दी गई। ~~Monopol~~

(2) Monopoly & Restrictive Trade practices act को पूर्ण रुप से इस औद्योगिक नीति के अंतर्गत समाप्त करने ~~किया गया~~ की पहल की गई।

(3) Custom duty को इस नीति के अंतर्गत कम कर देने का प्रावधान किया गया ताकि विदेशी व्यापार प्रोत्साहित हो। ~~व्यापा~~

(4) व्यापार खाते पर रुपये को पूर्ण रुप से परिवर्तनशील बनाने की चर्चा भी इस नीति के अंतर्गत की गई।

⑤ विशेष boards के अंतर्गत विदेशी कंपनियों से बातचीत करने का प्रावधान इस नीति के अंतर्गत किया ताकि भारतीय उद्योगों में अधिक से अधिक विदेशी निवेश हो सके तथा विदेशी तकनीक भी आयात की जा सके।

उदारीकरण :- औद्योगिक विकास को त्वरित करने के लिए सरकार की यह नीति आवश्यक थी जिसके अंतर्गत भारतीय तथा विदेशी निजी कंपनियाँ कई प्राथमिक क्षेत्र ex- ऊर्जा, सडक, संचार, पेट्रोलियम etc में निवेश कर सकते थे ताकि राज्य एवं केन्द्र सरकारों का भार कम हो सके तथा वे अधिक प्राथमिकता लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को दे सकें।

प्रमुख विशेषतायें :- ① इसके अंतर्गत औद्योगिक विकास का मुख्य अवरोध लालफीताशाही को कम करने की बात कही गई। प्रशासनिक नियंत्रण को औद्योगिक क्षेत्रों में कम किया गया तथा इस क्षेत्र को deregulisation किया गया।

② इस नीति के अंतर्गत औद्योगिक licensing को कम से कम करने की बात की गई तथा यह मात्र 16 उत्पादों ex- coal, Asbestos etc क्षेत्र में जरूरी था।

③ निर्यात तथा आयात पर लगे प्रतिबंधों को कम करने की भी चेष्टा उदारीकरण के अंतर्गत की गई।

उदारीकरण का प्रभाव :- ① प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में बढोत्तरी।
② GDP में वृद्धि।
③ रोजगार के अवसरों में वृद्धि।
④ आधारभूत संरचना का विकास
⑤ निर्यात में वृद्धि।
-ve ⑥ क्षेत्रीय असमानता में वृद्धि
⑦ घरेलू तथा लघु उद्योगों को क्षति (Retail sector)

औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक
↗
⇒ Creeping Inflation
↓
Inflation 0–6% तक

⇒ Galloping Inflation
↓
Inflation 15% तक अचानक वृद्धि

⇒ युद्ध के कारण Inflation 100% तक बढ़ जाये
↓
Hyper inflation

- Inflation (मुद्रा स्फीति) में वृद्धि

- Bangalore – हमने सबकुछ गवां बैठा
  - ↳ Job – America से Bangalore
  - ↳ Liberalisation के कारण

05/09/2012.

Textile Industry – Snowbowling Brainstorming
वस्त्रोद्योग

Eco. geography – I ⇒ Agriculture Typology
Agriculture classification by
→ Engel bretsch
→ Griegg
→ Whittsey
→ Anderson

→ Cotton Textile. FL ← ☐ ← BL

PR < diversity / conversity factor

I – Trade pattern of the world.

Cotton Textile

- Nature – Based? ↳ Raw (Raw material)
- Contribution in Indian Eco.
- Factors of localisation
- Application of that factor in Point of Indian Econom.
- Spatial distribution
- Evolution

→ भारत का प्राचीनतम उद्योग

→ cotton textile, Labour intensive उद्योग है।

→ सर्वाधिक employment generation.

→ माँग आधारित उद्योग है।

→ यह Basic एवं प्रणोदक उद्योग है। जिसमें आर्थिक तंत्र के पुर्ननिर्माण एवं Agrobased आर्थिक क्रियाओं को उत्पन्न करने की क्षमता है। यह लगभग 1.5 crore लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है तथा ग्रामीण रोजगार के लिए विशेषकर हथकरघा, एवं Power loom

→ यह उद्योग 3 अवस्थितियों को दर्शाता है

a) बाजार आधारित :– Ex :- Kanpur – Manchester of North India

कोलकाता, जालंधर, अमृतसर

अर्थात् North gangatic plain पर ~~आधारित~~ अवस्थित CTI बाजार आधारित उद्योग है।

b) कच्चे माल पर आधारित Ex- deccan Plateau पर अवस्थित शोलापुर, कोल्हापुर, रत्नागिरी, सूरत, भड़ौच, मुंबई, अहमदाबाद etc.

c) Transportation Network based :- 1853 में मुंबई ठाणे रेलमार्ग एवं तत्पश्चात रेलमार्ग का दक्कन के पठार पर विस्तार एवं कोलकाता तथा N. delhi एवं Gangatic plains पर विसरण किये गये। जिसका मुख्य उद्देश्य cotton Textile को विस्तृत करना तथा कच्चे माल को बंदरगाह तक पहुँचाना।

d) Port location :- उपनिवेशवाद में बंदरगाहों का विकास Europe को आपूर्ति के उद्देश्य से किया गया
Ex. मुंबई, चेन्नई, कोच्चि, कांडला, कोलकाता etc.
उपनिवेशवाद में सर्वाधिक उद्योग बंदरगाह के पास अवस्थित थे परन्तु 1920 के बाद इनका dispersion माँग आधारित अथवा बाजार आधारित देखा गया।

THE BOOK SHOP
Shop No.- A-35/36, Bhandari House
Dr. Mukherjee Nagar Delhi-09
Phone : 011-27652493

Raw Material :-

Raw cotton :- भारत में 3 प्रकार के cotton मिलते है

a) Long stepelled - 3-5 cm
पंजाब, Haryana, Ganganagar, TN उत्पादक है।
→ सिंचाई आधारित क्षेत्रों में प्राप्त।

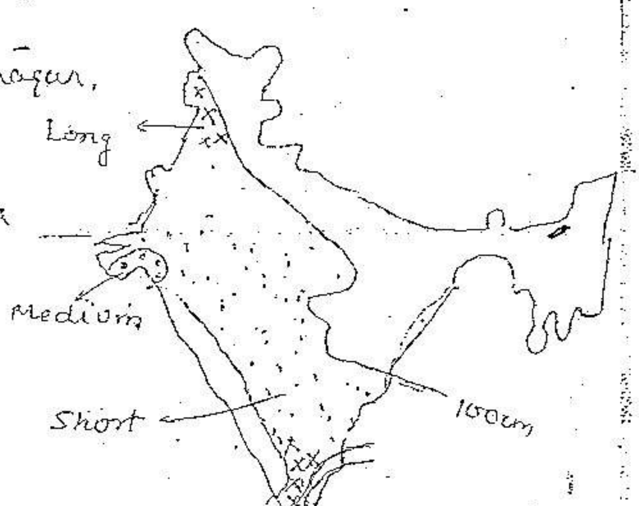

b) Medium Stapelled :- वर्षा - 60-70cm
किन्तु वर्षा आधारित कृषि है।
Ex: काठियावाड, सौराष्ट्र, गुजरात Plain, Poorna Valley (खानदेश) | 1.5 - 3 cm लंबाई

c) Short Stapelled :- 1.5 cm से कम
यह semi arid क्षेत्रों में जहां वर्षा आधारित कृषि है।

Ex मराठवाड़ा, विदर्भ, तेलंगाना, द.प.म.प्र., उत्तरी गुजरात।

भारत में 100 cm की समवर्षा रेखा cotton उत्पादक प्रदेश को विभाजित करती है।

Chemicals
- Soda ash
- Caustic soda
- Dye
- Colours
- Acid

old Mumbai ↓ cottonopolish of India ↓ due to cotton

अतः cotton textile chemical ind. के सामीप्य अथवा उनसे राजमार्गों से जुड़े होते है।

cotton textile के 3 sector है

a) Mill sector - 1950's में 90% उत्पादन होता था किन्तु वर्तमान में 6%
b) Power loom sector → PL जो सिर्फ 3% था → वर्तमान में 3/4th से अधिक ≈ 80%
c) Hand loom sector → वर्तमान में 13-14%

CT के चरण :- इसके 3 चरण है

प्रारंभिक चरण - 1818-1920 :- 1818- कोलकत्ता Fort Gloster में स्थापना परन्तु fail

1854 - Bombay Textile mill
1861 - Ahmadabad —"— —"—
1869 - Kanpur —"— —"—

1920's तक भारत में कुल 134 Textile mill स्थापित हो चुके थे जिसका मुख्य कारण भारत में बढ़ती मांग एवं यूरोपीय बाजार था।

द्वितीयक चरण (1920-1950) :- यह mill sector में क्रमिक पतन का चरण है जिसमें 1947 के विभाजन के बाद 90% cotton उत्पादक क्षेत्र Pak. चले गये जबकि 90% से अधिक mill भारत में रह गये अतः कच्चे माल की कमी ने इस ind. में decline तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजार की हानि हो गयी है।

स्वतंत्रता के बाद नयी औद्योगिक नीति 1956 में भारी उद्योगो पर बल दिया गया जबकि Agro based Ind. उपेक्षित रहे।

तृतीय चरण (1970 - वर्तमान) :- चतुर्थ पंचवर्षीय योजना एवं 7 वी पं.यो. में कृषि आधारित उद्योगो पर बल दिया तथा Power loom Sector का उत्थान काल है क्योंकि mill sector में हड़ताल एवं तालाबंदी, कच्चे माल की कमी, Energy का demand. high Labour cost.

New cotton policy के अंतर्गत पुराने Machinery को प्रतिस्थापित कर. नये प्रौद्योगिकी, निर्यात

3-न्मुखता, Energy, Transportation & communication
श्रम को आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा प्रदान की गयी।

Bt-cotton एवं उसके लाभ :- India में Bt-cotton को use करने की योजना है जो cotton की indegenous variety को प्रतिस्थापित करेगा। यह बीज का अभाव, long steppled cotton, उच्च उत्पादकता, Pest resistant cotton, बढ़ते मांग के प्रसंग में बाजार को

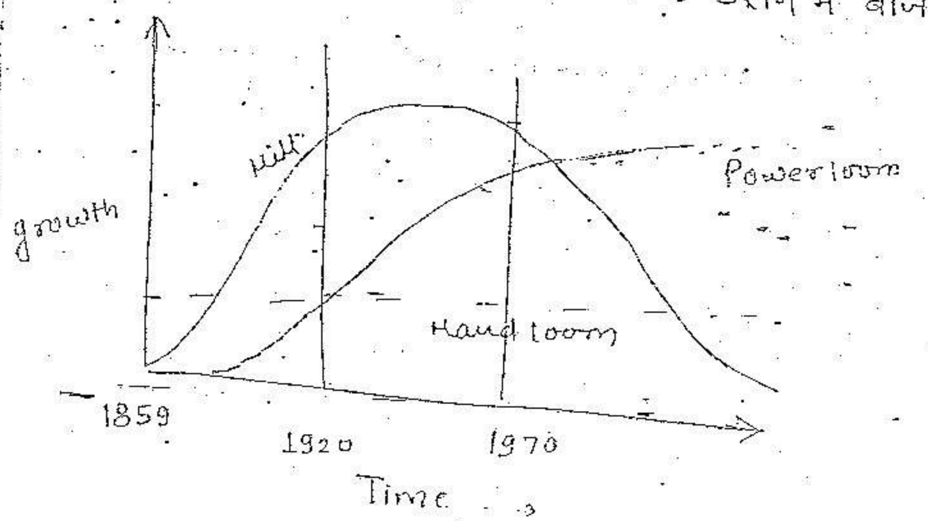

सेवित कर सकता है।

Cotton Textile Industry का वितरण → India Map from NCERT.

समस्यायें :- ① Obsulate Machinery (पारंपरिक)
② Short stapelled Raw material
③ विश्व व्यापार में प्रतिस्पर्धा
④ Synthetic fiber से प्रतिस्पर्धा
⑤ High Labour cost
⑥ Lack of Infrastructure.
⑦ Energy sector failure
⑧ Pest & disease
⑨ जलवायु - कहीं अर्द्धशुष्क
कहीं तीव्र हवा

कभी अनावृष्टि
कभी अतिवृष्टि

India Map

Trade Pattern :- व्यापार एक स्थानिक विश्लेषण है जिसमें दो अथवा 2 से अधिक इकाई प्रदेश अथवा व्यक्ति समूह वस्तु एवं सेवाओं का निर्धारित मूल्य के आधार पर आदान - प्रदान करते है।

Bombay
New york)
commercial city
(BSE+ Bank

व्यापार का अर्थ वाणिज्य है। वाणिज्य एक संपूर्ण शब्दावली है जिसमें वाणिज्य के पृथक संस्थागत इकाइयों को एवं बाजार को भी सम्मिलित किया जाता है। Trade इस प्रकार से commerce का एक लघु इकाई है।

Trade के अंतर्गत आगत - निर्गत संबंध होते है जिन्हें वस्तु सेवाओं के अंतःप्रवाह एवं बाह्य प्रवाह के रूप में जाना जाता है। Trade उन्हीं दो स्थानों / इकाई के बीच में उत्पन्न होता है जहाँ किसी वस्तु अथवा सेवा का अधिशेष एवं ह्रास प्राप्त होता है।

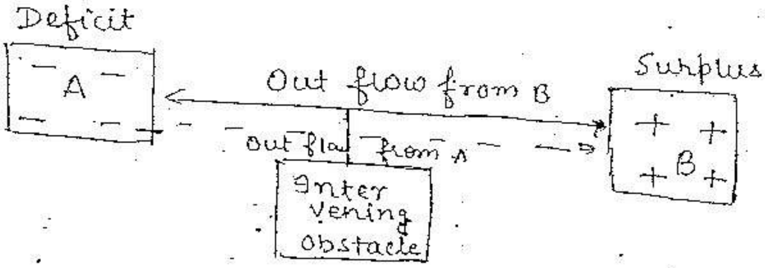

Trade वास्तव मे वस्तु एवं सेवाओ का विनिमय है जो किसी मौद्रिक मूल्य पर निर्धारित होता है।

Recardo का comparative Cost Analysis (तुलनात्मक लागत विश्लेषण) :- Recardo ने मांग एवं मूल्य को नियत माना जिससे व्यापार पर लागत के प्रभाव को सिद्ध कर सके।

यदि 2 प्रदेश इकाई A एवं B है जहाँ A पर गेहूँ का उत्पादन मूल्य 10₹/Unit तथा गन्ने का 20₹/unit है। जबकि कृषि प्रदेश B पर यह मूल्य क्रमशः 20₹ एवं 10₹ है अतः प्रदेश A. ~~से पर प्रदेश~~ गेहूँ का अधिशेष एवं B पर गन्ने का अधिशेष तथा दोनो के मध्य व्यापार होगा क्योंकि दोनो वस्तुओं की मांग बराबर है।

W x 10
S x 20

wheat surplus

W x 20
S x 10

sugarcane surplus

— Trade Pattern का अर्थ है a) निर्यात एवं आयात के वस्तु एवं सेवाओं का विश्लेषण।

b) व्यापार की दिशा। Ex गैर विकसित से विकसित मे कच्चे माल जबकि विकसित से गैर विकसित में तकनीक एवं वस्तु का flow

c) विश्व व्यापार में भागीदारिता

d) विश्व व्यापार को नियंत्रित करने वाले कारक
— Ex. WTO, IMF, WB, ADB etc

e) विश्व के व्यापारिक संगठन
Ex. ~~NH~~ NAFTA, मर्कोसुर (S. America), EU, AU, OPEC SAARC, ASEAN, SCO, BRICS

Agriculture Typology (कृषि प्रकारिकी)
And
Agricultural classification

→ Engel bretsch
→ Griegg
→ Whittley
→ Anderson

कृषि एक dynamic concept है तथा कृषि भूदृश्य नियत नही होता बल्कि प्रौद्योगिकी एवं आधुनिक आगतों के प्रयोग से परिवर्तनशील होता है। विश्व कृषि का प्रथम वर्गीकरण Engel bretsch ने प्रस्तुत किया जिसका आधार भौतिक कारक थे। अतः यह वर्गीकरण विश्व के जलवायु वर्गीकरण के समतुल्य हो गया है तथा कृषि भूदृश्य के परिवर्तनशीलता को दर्शाने में असफल रहा।

1933 मे Griegg ने वर्गीकरण के नये विधि, जो गैर-भौतिक कारकों पर आधारित है, प्रस्तुत किया। इनका वर्गीकरण नियतिवादी वर्गीकरण न होकर संभववादी वर्गीकरण है जो मानवजन्य कारकों को अधिक महत्त्व देता है। Griegg ने कृषि प्रकारिकी को वर्गीकरण का आधार बताया। ~~प्रकारिकी~~ का अर्थ है कृषि के स्वरूप, प्रकृति, उत्पादन विधियाँ, उद्देश्य, यांत्रिक प्रक्रिया, शस्य प्रणाली एवं संयोजन जैसे कारको का समेकित आयाम है। प्रकारिकी कृषि प्रणाली परंपरा कृषि, पर्यावरणीय चिंतन, कृषि की मैं मांग जैसे तथ्यों को प्रकट करता है जो कृषि के वास्तविक एवं परिवर्तनशील स्वरूप को प्रकट करता है।

प्रकारिकी के अंतर्गत Griegg ने निम्नांकित तथ्यो को रखा

a) कृषि में आधुनिक आगतों के प्रयोग।
b) कृषि में मशीनीकरण
c) कृषि का वाणिज्यीकरण
d) कृषि गहनता
e) कृषि में फसल संयोजन

f) कृषि में संरचनात्मक विकास
g) कृषि नीतियाँ जो प्रकारिकी को निर्धारित करती हैं।

Whittlsey ने 1936 मे विश्व के कृषि को प्रकारिकी के आधार पर प्रस्तुत किया जो वैश्विक वर्गीकरण भी है और प्रकारिकी भी।

वर्गीकरण का आधार :-

a) शस्य एवं पशुधन का संयोजन
b) मशीनीकरण की दर
c) वाणिज्यीकरण की दर
d) Intensity of Land use
e) Structional component

कृषि प्रदेश / प्रकारिकी :- 13 प्रकार है -

1. Nomadic Herding (प्रवासी / घुमन्तु पशुचारण / चल कृषि):

विश्व के दुष्कर जलवायु प्रदेश एवं जटिल भूदृश्य पर प्राप्त होते है।

Ex- Sahara में Tuareg
अरब में बद्दू
Siberian का Yakut, Chukchi, Yakaghis, Lapps
India का गुजर बकरवाल

2. Shifting cultivation (झूम कृषि):- इसे मध्य भारत में Poda, Bewar, Srilanka में chena, Brazil में Rocco, Venezuala में conuco, Mid-America में Milipa Malesia में Ladang, Indonesia - Humah

08/09/2014

पटसन उद्योग (Jute Industry)

क्या है
कब से
उपयोगिता
आधार - कारक — भू भौतिक / देशायें / आवश्यक
वितरण
उत्पादन
समस्या
समाधान / समस्यायें

कृषि आधारित उद्योगों में जूट उद्योग सूती वस्त्र उद्योग के बाद दूसरा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह उद्योग बंगाल में हथकरघा उद्योग के रूप में प्राचीन काल से ही प्रचलित था परन्तु आधुनिक जूट मिल की स्थापना 1854 में कोलकाता के समीप रिसरा नामक स्थान पर की गई।

निर्यात आधारित उद्योग होने के कारण इसका उत्पादन तीव्र दर से हुआ जिसे प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध काल में और बल मिला। 1920 के दशक में भारतीय उद्योगों को दिये संरक्षण के उपरांत इस उद्योग का तीव्र विकास हुआ। जिसके फलस्वरूप स्वतंत्रता प्राप्ति के समय कुल स्थापित मिलों की संख्या 112 तक पहुँच गई।

परन्तु भारत के विभाजन से इस उद्योग को गहरा आघात पहुँचा। लगभग 2/3 जूट उत्पादक क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान में जबकि 102 मिले भारत में रह गयी। फलतः कच्चे माल की कमी से कई मिले रुग्ण एवं बंद हो गयी। स्वतंत्र भारत में विभिन्न योजनाओं के दौरान इस उद्योग के विकास के लिए निम्न 3 स्तरों पर प्रयास किया गया.

a) पटसन उत्पादन क्षेत्र एवं उत्पादकता वृद्धि हेतु प्रयास किये गये।

b) मिलों की स्थापित क्षमता में वृद्धि हेतु उपाय किये गये।

c) पटसन निर्मित वस्तु ex - बोरा, रस्सी, कालीन etc को वरीयता दी गई।

वर्तमान में WB के साथ-2 पूर्वी तटीय मैदान, ब्रह्मपुत्र घाटी, त्रिपुरा मैदान एवं तराई क्षेत्र में जूट उत्पादन हेतु सफल प्रयास किये गये जिससे कच्चे माल की समस्या का समाधान कर लिया गया है।

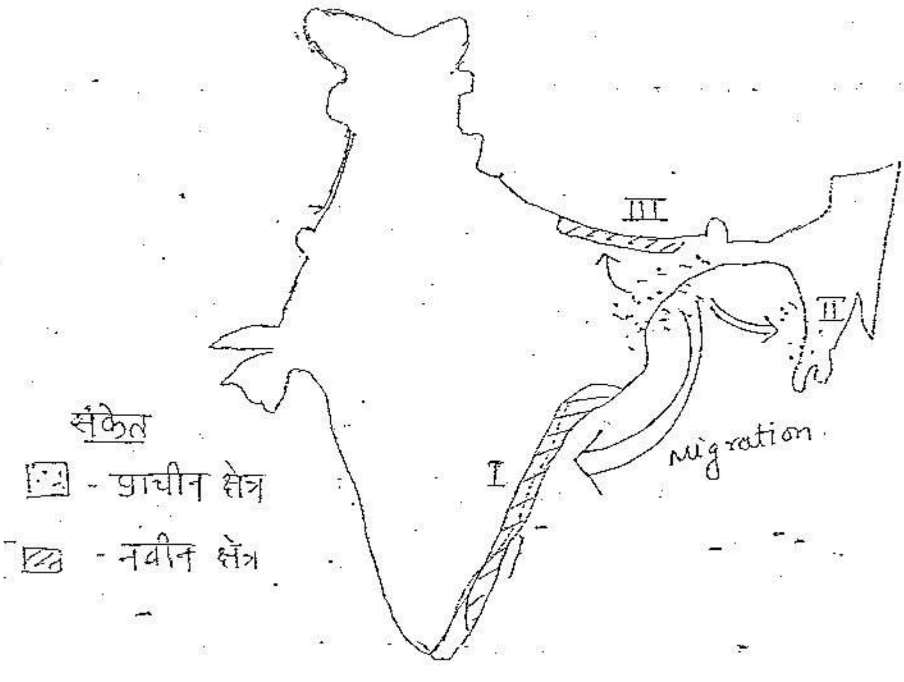

जूट उत्पादक क्षेत्र

जूट के उपयोग :- ① वस्त्र

जूट उद्योग के स्थानीयकरण के कारण :-

① कच्चा माल - यह एक शुद्ध (Pure) पदार्थ है । अतः इसको [illegible] - बाजार केन्द्रों के समीप की जाती है ।

② उष्णार्द्र जलवायु :- अच्छे धागे की प्राप्ति हेतु [illegible] नम होनी चाहिए ।

③ सुलभ प्रचुर नदी जल :-

④ सस्ता एवं प्रचुर श्रम की उपलब्धता

⑤ उपजाऊ जलोढ़ मैदान

⑥ सस्ती ऊर्जा

वितरण :- सर्वाधिक संकेन्द्रण WB में Hoogli नदी के दोनों तरफ (लगभग 85%) प्राप्त होता है। इसके उपरांत आंध्रप्रदेश - द्वितीय प्रमुख उत्पादक ; बिहार, UP, असम छत्तीसगढ़ etc है।

(1) West bengal :- हुगली नदी के दोनों तरफ लगभग 100Km की लंबाई में बांसबेरिया से बिरलापुर तक है। प्रमुख उत्पादक रिसरा, नौहाटी, टीटागढ़, श्रीरामपुर, बजबज, हावड़ा etc. यहाँ उद्योगों के स्थानीयकरण हेतु निम्न कारक उत्तरदायी है -

a) उपजाऊ गंगा delta मैदान
b) हुगली नदी की जल उपलब्धता
c) उष्णार्द्र जलवायु
d) रेल एवं सड़क मार्गों की समुचित व्यवस्था
e) मशीनों के आयात एवं जूट के निर्यात हेतु कोलकाता बंदरगाह
f) निकटवर्ती सस्ते एवं प्रचुर श्रम की उपलब्धता
g) पूँजीपतियों में उद्यमशीलता
h) ऊर्जा हेतु रानीगंज एवं झरिया से प्राप्त कोयला
i) दामोदर एवं मयूराक्षी नदी से प्राप्त जल विद्युत
j) Banking एवं वित्त की समुचित व्यवस्था

(2) Andhra Pradesh :- Godavari एवं Krishna delta क्षेत्र पटसन उत्पादक क्षेत्र में विशाखापट्टनम पूर्वी गोदावरी एवं गुंटूर में आधुनिक मिलें स्थापित की गई हैं।

(3) Bihar 3 महत्त्वपूर्ण जिले दरभंगा, कटिहार एवं पूर्णिया जिले। अररिया dist.

(4) UP Kanpur में आयातित जूट पर आधारित आधुनिक

चीनी उद्योग Sugar Industry

कृषि आधारित उद्योग में वस्त्रोद्योग के बाद संगठित उद्योगों में दूसरा स्थान रखता है। चीनी का उत्पादन विश्व स्तर पर चुकंदर, गन्ना, शकरकंद आदि से किया जाता है परन्तु भारत में चीनी उत्पादन का महत्त्वपूर्ण स्रोत गन्ना ही है।

→ भूमिका
→ उत्पादन इति.
→ स्थानीयकरण के कारण
→ वितरण
→ समस्या
→ सुझाव

भारत में चीनी उद्योग प्राचीन काल से ही प्रचलित है। गुड, खांडसारी आदि बनाने में भारतीय प्राचीन काल से ही पारंगत हैं जिसका वर्णन विभिन्न संहिताओं से प्राप्त होता है। भारत को sugar cane house के नाम से भी जाना जाता है।

वर्तमान में यह उद्योग 4 lakh से अधिक लोगो को आजीविका प्रदान कर रहा है साथ ही इससे उत्पादित सह उत्पाद शीरा, Alcohol, Ethanol, गन्ने की खोई संबंधी उद्योगो का भी विकास हुआ है।

चीनी उद्योग का आधुनिक विकास :- यह उद्योग वर्तमान काल में 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध से आधुनिक रूप में आया। 1903 में बिहार में पहली चीनी मिल की स्थापित की गई। तत्पश्चात प्रथम एवं द्वितीय ... काल में चीनी मिलों को न्यून प्रोत्साहन मिला जिससे बिहार एवं UP में कई मिलें स्थापित की गई।

1931 तक मिलों के स्थापना की दर सरकार के नियंत्रण में थी तथापि 34 मिलें स्थापित हो गई। 1931 के उपरांत इस उद्योग में तीव्र विकास हुआ फलतः 1951 में चीनी मिलों की संख्या बढ़कर 140 हो गयी।

	No. of Mill	उत्पादन
1931	34	
1951	140	
2010	847	2.82 lakh ton

वर्तमान में भारत चीनी का सबसे बडा उत्पादक देश बन गया है।

स्थानीयकरण के कारक :- ① चीनी उत्पादन हेतु महत्त्वपूर्ण कारक गन्ना है जो कि कुल उत्पादन लागत का 50% व्यय वहन करता है। चीनी उद्योग एक मूल ह्रास उद्योग है जिसमें उद्योगों की अवस्थिति गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में ही हो सकती है। लगभग 100 tonne गन्ने से 10-12 tonne चीनी प्राप्त होती है। गन्ने की दूसरी बडी समस्या सूखने व सडने की है। फलतः इसका शीघ्र उपयोग आवश्यक है।

पुनः यह ध्यान रहे कि गन्ने की कटाई एवं पिराई का कार्य साथ-2 होना चाहिए।

② ऊर्जा की उपलब्धता एवं परिवहन सुविधा की उपलब्धता भी अन्य महत्त्वपूर्ण कारक है परन्तु ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति अब गन्ने की खोई को जलाकर की जाती है।

वितरण :- a) परंपरागत क्षेत्र :- उत्तर भारत का मैदानी क्षेत्र → यहां के प्रमुख उत्पादक राज्य UP, बिहार एवं पंजाब - हरियाणा तथा उत्तर पश्चिम राजस्थान है।

UP :- यह राज्य चीनी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं प्राथमिक उत्पादक राज्यों में है परन्तु वर्तमान में सापेक्षिक उत्पादन कम होने से महाराष्ट्र के बाद द्वितीय बडा उत्पादक राज्य है। वर्तमान में कुल चीनी उत्पादन का 20% भाग UP में उत्पादित होता है। इसके 2 महत्त्वपूर्ण गन्ना उत्पादक क्षेत्र है

→ गन्ना यमुना दोआब क्षेत्र जिसमें मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फर नगर कानपुर व रायबरेली etc

→ तराई क्षेत्र - देवरिया, गोरखपुर, गोण्डा एवं बस्ती आदि जिले।

mill एवं गोरखपुर के सहजनवा नामक स्थान पर (तराई क्षेत्र में उत्पादित पटसन) मिल स्थापित की गई है। व

वर्तमान में छ0 में रायगढ जिले पर भी जूट मिलों की स्थापना की गई है।

उत्पादन - Year book . उत्पादन + निर्यात → मात्रा → किन देशों को

समस्यायें :- ① कच्चे माल की वर्तमान में भी समस्या बनी हुई है जिसका कारण उत्पादन एवं उत्पादकता में अनिश्चितता एवं अस्थिरता है।

② कृत्रिम रेशे से कडी प्रतिस्पर्धा । ex - Synthetic polymer Polythene etc.

③ विदेशी बाजार से कडी प्रतिस्पर्धा - Bangladesh, Indonesia, Ghana, Nigeria प्रमुख निर्यातक देश है।

उत्पादक - भारत सबसे बडा
निर्यातक - सबसे बडा - B/G - Ind.

④ मशीनों एवं विभिन्न उत्पादों के आधुनिकीकरण का अभाव परिणामतः उत्पादन की बढती लागत एवं लाभ की कमी।

⑤ प्रत्येक स्थान पर समुचित ऊर्जा की अनुपलब्धता।

⑥ रुग्ण इकाइयों की समस्या।

समाधान :- इस हेतु 2 स्तरीय प्रयास किये जाने चाहिए

a) संस्थागत प्रयास b) नीतिगत प्रयास

a) संस्थागत प्रयास . उत्पादन बढाने हेतु, उन्नत बीज, MSP आदि की व्यवस्था की जावे

→ पर्याप्त शक्ति की व्यवस्था

→ बीमार इकाइयों को सहायता

→ Research & development पर समुचित व्यय

→ ~~निर्यात हेतु बाजार की व्यवस्था~~

नीतिगत प्रयास :- इस उद्योग हेतु समुचित नीतियाँ बनायी जाये जिससे जूट उद्योग को प्रोत्साहन मिल सके। इस हेतु भारत सरकार द्वारा 'पटसन नीति -2005' की घोषणा की गई है जिसके अंतर्गत उच्च गुणवत्तायुक्त बीज, मूल्य निर्धारण की व्यवस्था, मूल निर्धारण हेतु credit की व्यवस्था।

जूट उद्योग का भविष्य :- Golden fibre नाम से मशहूर यह रेशा प्राकृतिक पुर्ननवीकरणीय, Bio degredable, पारिस्थितिक मित्र गुणों से युक्त होने के कारण वैश्विक मांग को प्रेरित करता है।

वर्तमान में विश्व के कई देश Ex- जर्मनी आदि मे अपनी राष्ट्रीय नीतियों में Plastic packing का बहिष्कार किया है। भारतीय संदर्भ में - delhi, Himanchal Pradesh, Rajasthan में लागू।

Jute के fibre प्रयोग से 10-12%

जूट के नवीन प्रयोग Ex- सड़क निर्माण, बांध निर्माण, भू-स्खलन रोकने, वस्त्र एवं कालीन उद्योग की बढ़ती मांग इसके सुनहरे भविष्य की द्योतक है।

बिहार :- बिहार का भी सापेक्षिक उत्पादन कम हुआ है। जिसका योगदान कुल उत्पादन में 1.5% रह गया है। इसके महत्त्वपूर्ण उत्पादक चंपारण, सीवान, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, गया etc है।

पंजाब :- अमृतसर, जालंधर, पटियाला etc

हरियाणा :- करनाल, अंबाला, रोहतक

राजस्थान :- गंगानगर एवं हनुमानगढ़, कोटा

गुजरात :- राजकोट, अमरेली, जूनागढ़, भावनगर

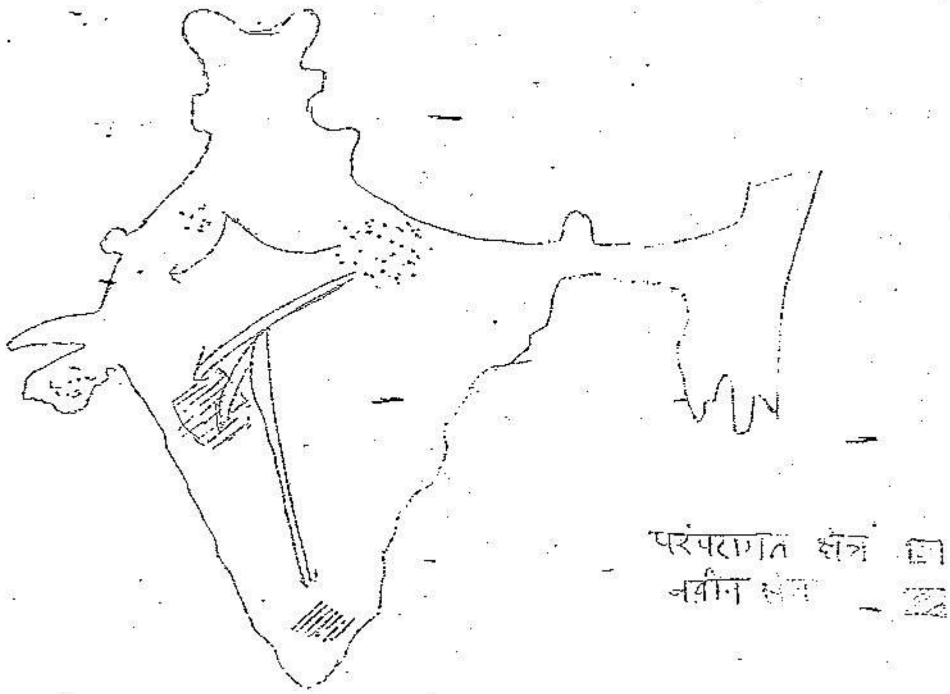

नवीन क्षेत्र :-

दक्षिण भारत :- S. India चीनी उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की है। 1965-66 में कुल चीनी उत्पादन का 40% द. भारत में होता था परन्तु अब यह क्षेत्र 60% उत्पादन करता है। प्रमुख उत्पादक राज्य महाराष्ट्र, TN एवं कर्नाटक है।

चीनी उद्योगों के दक्षिण की ओर स्थानांतरण के नि. लि. प्रमुख कारण है :-

a) उष्णार्द्र जलवायु जिससे गन्ने की ~~पेरि~~ पिराई का समय अधिक मिल जाता है।

b) गन्ने का स्वभाव उष्ण कटिबंधीय है। उष्ण कटिबंधीय जलवायु में गन्ने की मोटाई, रस की मात्रा एवं रस में sucrose की मात्रा अधिक प्राप्त होती है।

c) दक्कन लावा मृदा में $CaCO_3$ के अंश की अधिकता जल को सोखकर रखती है जो गन्ने के फसल के लिए आवश्यक होता है।

d) बड़े बंदरगाहों की अवस्थिति जो कि बड़े मशीनों के आयात हेतु आवश्यक थे।

e) महाराष्ट्र में सहकारिता के विकास से गन्ने के उत्पादन को अत्यंत प्रोत्साहन हो गया।

महाराष्ट्र :- → देश ~~में~~ सबसे बड़ा उत्पादक
→ लगभग 35%
→ कारखानों की संख्या में द्वितीय स्थान
→ नासिक से कोल्हापुर तक एक संकरी पट्टी में जिले महत्वपूर्ण जिले नासिक, अहमदनगर, पुणे, सतारा, औरंगाबाद एवं कोल्हापुर है।

TN :- तीसरा बड़ा उत्पादक
गन्ने की प्रतिहेक्टेयर उत्पादकता सर्वाधिक अतः चीनी-उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि...
कोयम्बटूर, त्रिचरापल्ली, उत्तरी एवं दक्षिणी अरकाट जिले प्रमुखता से।

Karnataka :- बेलगांव, बीजापुर, चित्रदुर्ग etc

Andhra Pradesh :- यहां चीनी उत्पादन में कमी
Medak, उत्तरी एवं दक्षिणी गोदावरी

निजामाबाद एवं चित्तूर जिले।

इनके अलावा WB के माल्दा, मुर्शिदाबाद नादिया etc. जिले चीनी का उत्पादन

समस्या :- ① प्रति हेक्टेयर उत्पादकता कम

↳ क्यूबा जावा - 65-70 tonne / Hectare

भारत - 15 tonne / Hectare

② परंपरागत परिवहन के साधन जिससे परिवहन व्यय अधिक

③ गन्ने का सापेक्षिक मूल्य अधिक

④ मशीनें छोटी एवं पुरानी

⑤ पिराई का मौसम सीमित दिनों तक

N. India - लगभग - 100 day

S. India - लगभग 120-130 day

⑥ Tax burden

⑦ गन्ने की बीमारी

⑧ Bi-products का समुचित प्रयोग नहीं

⑨ Ethanol बनाने में प्रयोग

सुधार के प्रयास :- ① आधुनिक तकनीक के प्रयोग से गन्ने के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि का प्रयास

② पुरानी मिलों के स्थान पर नवीन आधुनिक मिलें स्थापित की जाये तथा रुग्ण मिलो के साथ एवं बंद पड़ी इकाइयों के पुनर्स्थापना हेतु वित्त की व्यवस्था।

③ Tax rate कम

④ राज्य सहकारिता का विकास इसमें सहायक

⑤ उद्यमियों के लिए Banking एवं वित्त की समुचित व्यवस्था।

04/09/2012

Paper Industry — कागज उद्योग

भूमिका – विकास
↓
स्थानीयकरण के कारक
↓
समस्या / समाधान

आधुनिक सभ्यता एवं संस्कृति का महत्त्वपूर्ण आधार। कागज उद्योग का विकास सर्वप्रथम चीन में ईसा पूर्व 300 सदी में आरंभ हो चुका था।

Paper शब्द की उत्पत्ति नील नदी delta क्षेत्र पर पायी जाने वाली Papyrus घास से हुई है। भारत में आधुनिक Paper mill का विकास 19वीं सदी की देन है। वर्तमान में कागज उत्पादन वैश्विक तुलना के आधार पर अत्यंत कम है। Ex- Europe में प्रति व्यक्ति paper उत्पादन एवं उपयोग भारत की तुलना में काफी अधिक है।

उपयोग { यूरोप – 50 kg / व्यक्ति
भारत – 7 kg / व्यक्ति }

सर्वप्रथम आधुनिक paper mill की स्थापना 1832 में WB के श्रीरामपुर, तत्पश्चात 1870 में कोलकाता के निकट बालीगंज में हुई। स्वदेशी आंदोलन एवं दोनो WW के दौरान इस उद्योग ने काफी उन्नति की तथापि वास्तविक प्रगति स्वतंत्रोत्तर भारत में विभिन्न योजनाओं के दौरान हुई।

1950 में कुल 17 Paper mill थी जिनकी उत्पादन क्षमता 1.6 lakh tonne थी वर्तमान में 700 paper mill स्थापित है जिनमें से 330 mills pulp का निर्माण तथा लगभग 370 mills कागज का निर्माण करती है जिनकी कुल उत्पादन क्षमता 65 lakh tonne है।

अवस्थिति के कारक :-

1. कच्चा माल :-

a) परंपरागत – बांस, सवाई घास, फर, स्प्रूस, चीड etc. (Coniferous Forest)

b) नवीन – धान एवं गेहूँ के पुआल, यूकेलिप्टस, धान की भूसी एवं पुराने चिथित कागज एवं वस्त्र,

Paper-pulp उत्पादन की दो विधियाँ है -

a) यांत्रिक विधि -

b) रासायनिक विधि -

2. परिवहन के साधन :-

3. कुशल एवं सस्ता श्रम -

4. ऊर्जा की उपलब्धता

कागज का वितरण :- सर्वप्रथम कागज उद्योग बंगाल मे हुगली नदी के समीपवर्ती क्षेत्र मे सीमित रहा। परन्तु वर्तमान मे कई राज्य Paper-pulp का उत्पादन करते है

WB - इस राज्य को Industrial inertia (पूर्वारम्भ) का लाभ प्राप्त है अर्थात् बंगाल का उद्योगपति इस उद्योग मे निवेश हेतु प्रेरित होता है। बंगाल लगभग 80% कागज का उत्पादन राष्ट्रीय स्तर पर कर रहा है। इसके प्रमुख केन्द्र टीटानगर, नाहाटी, बालीगंज, त्रिवेणी, चंद्रहाटी एवं [illegible] etc है।

टीटानगर देश का सबसे बडा कागज उत्पादक औद्योगिक नगर है।

WB में Paper industry के develop होने के कारण :-

1. सुंदरवन से प्राप्त घास, झारखण्ड एवं बिहार से प्राप्त बांस एवं सवाई घास (तराई) ।
2. दामोदर एवं हुगली नदी का स्वच्छ जल
3. समीपी प्रचुर एवं सस्ता श्रम
4. रानीगंज एवं झरिया कोयला क्षेत्र से कोयले की प्राप्ति ।
5. कोलकाता बंदरगाह एवं समीपी विशाल बाजार की अवस्थिति

Andhra Pradesh :- द्वितीय स्थान - लगभग 13.5%
स्थानीय बांस पर आधारित 4 प्रमुख केन्द्र

a) पश्चिमी गोदावरी में राजमुंदरी
b) आदिलाबाद जिले में सिरपुर — — —
c) निजामाबाद जिले में बोधन शुद्ध
d) विशाखापट्टनम

Maharastra :- तृतीय स्थान, लगभग 10% उत्पादन
Mumbai, Pune, Roha, कांप्टी एवं कल्याण महत्त्वपूर्ण उत्पादक है।
स्थानीय बांस, गन्ने की खोई, रद्दी कागज एवं कपडों के चिथडे एवं आयातित लुग्दी पर आधारित

Madhya Pradesh :- सतपुडा एवं विन्ध्यन से प्राप्त बांस, सवाई घास एवं यूकेलिप्टस के प्रयोग पर आधारित
इंदौर, भोपाल, रतलाम, शहडोल, नेपानगर (अमलाई)
महत्त्वपूर्ण उत्पादक है। ~~इसके~~
इसके अलावा गुजरात, बिहार, TN एवं UP में भी कागज उत्पादक मिलें स्थापित है।
भारत में अखबारी कागज का उत्पादन 1981 में स्थापित National news print &

75% + उत्पादन

{Paper mill Ltd (Nepanagar) द्वारा, Mysore paper mill एवं Hindustan news paper print Ltd (एर्नाकुलम) द्वारा प्रमुखता से किया जाता है।

वर्तमान में भारत में कागज उत्पादन एवं उपभोग में तीव्र वृद्धि आई है जिसकी आपूर्ति आयातित Paper द्वारा की जाती है। भारत - स्वीडन, कनाडा, Japan एवं china etc देशों से अच्छी गुणवत्ता युक्त paper का आयात करता है।

china अखबारी कागज का सबसे बड़ा निर्यातक भारत के लिए

समस्या एवं समाधान :- ① बीमार पड़ी इकाइयों के पुर्नउपयोग हेतु समुचित वित्त की व्यवस्था एवं उनके आधुनिकीकरण की व्यवस्था।

② बड़े कारखाने अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नही कर पा रहे (66% अतः समुचित कच्चे माल एवं ऊर्जा की व्यवस्था)

③ उच्च गुणवत्तायुक्त कच्चे माल का अभाव (शंकुधारी वन) / अगम्यता

④ समुचित मात्रा में उपलब्ध कच्चे माल क्षेत्र में NE India आधारभूत संरचना एवं पूँजी निवेश का अभाव।

⑤ आयात शुल्क कम एवं उत्पाद शुल्क अधिक होने से आयातित Paper से प्रतिस्पर्धा

तथापि भारत में बढती साक्षरता, उत्तरोत्तर Paper की बढती मांग इस उद्योग के वृद्धि में सहायक है साथ ही भारत में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध श्रम, रुई, [illegible] कपड़ो की पर्याप्त उपलब्धता एवं चूंकि भारत का अधिकांश Paper hand made है जो कि Eco friendly है इसलिए इस उद्योग का विकास सुनिश्चित है।

Automobile Industry (मोटर वाहन उद्योग)

भूमिका :- आर्थिक विकास का महत्त्वपूर्ण आधार मोटर वाहन उद्योग Railway के साथ मिलकर संपूर्ण भारत को एक कड़ी के रूप में जोड़ता है। इसकी महत्ता की दृष्टि से परिसंचरण तंत्र में प्रवाहित हो रहे रुधिर से तुलना की जाती है। इस उद्योग का विकास नवीन उद्योगों के समतुल्य हुआ है। तकनीकी विकास में इस उद्योग ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता के उपरांत भी विभिन्न योजना कालों में इस उद्योग का विकास- मंद रहा किन्तु 6th F.Y.P. के उपरांत एवं नयी आर्थिक नीति में अपनाये गये भूमंडलीकरण एवं उदारीकरण ने इस उद्योग को अत्यंत प्रोत्साहित किया।

वर्तमान में मोटर वाहन उद्योग की भागीदारी लगभग 5.5% एवं वृद्धि दर 10% है।

मोटर वाहन उद्योग 2 प्रकार के हैं -

a) मालवाहक
- भारी मालवाहक
  - Truck,
  - Tractor
  - Trailor
- हल्के मालवाहक

b) सवारीवाहक
- 4 पहिया
- 2 पहिया

स्थानीयकरण एवं वितरण :-

① दिल्ली, गाजियाबाद एवं गुड़गांव संकुल :- इस क्षेत्र में स्थापित मुख्य इकाइयाँ

Maruti - Manesar

Honda - Faridabad

Debu motor - Faridabad

Telco motor - Ghaziabad.

कारक :- ① दिल्ली के समीपी क्षेत्र की उच्च प्रतिव्यक्ति आय
② पूँजी निवेश का समुचित माहौल
③ आधारभूत संरचना का विकास
④ पर्याप्त ऊर्जा आपूर्ति

Mumbai - Pune - Nasik Industrial :-

प्रीमियर आटो लिमि. - Mumbai
बजाज आटो - पुणे → पिंपरी
4 टेल्को मोटर - पुणे - चिंचवाड
महिन्द्रा & महिन्द्रा - कांदीवली मुंबई
Kinetic motor - गोरेगांव

कारक :- ① मुंबई पत्तन मे आयात की सुविधा।
② मुंबई के समीपी क्षेत्र का वृहद बाजार
③ पश्चिमी power grid से ऊर्जा की आपूर्ति
④ पूंजीपतियों का विशाल समूह
⑤ उच्च प्रति व्यक्ति आय

चेन्नई - बंगलूरु औद्योगिक संकुल :-

Ashoka leyland - chennai
Premier motor Fiat एवं Ambesder - Chennai -
Mitsubishi - तिरुवल्लूर (शिवराय पहाड़ियों

कारक :- ① चेन्नई एवं तुतीकोरीन पत्तन की उपस्थिति।
② दक्षिणी power grid से ऊर्जा की उपलब्धता
③ चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र के जड़ता का प्रभाव
④ सेलम क्षेत्र से उत्पादित उच्च गुणवत्ता वाला लौह इस्पात।

वर्तमान में Jamshedpur में Tata motor, Kolkata में Telco. Vadodara में opel, Ahmadabad के निकट Tata Nano (साणंद), M.P. में पीथमपुरा प्रमुख मोटर वाहन उद्योग केन्द्र है।

समस्या :- ① भारतीय सड़कों की दयनीय स्थिति।
② पुराने वाहनों को रद्दी वाहन करार देने हेतु समुचित नीतियों का अभाव।
③ वाहनों की क्षमता से अधिक भार वहन।
④ वाहनों के कलपुर्जों हेतु आयात पर निर्भरता
⑤ पर्यावरणीय मानकों के अनुरूप इंजन निर्माण का न होना।
⑥ वैश्विक मंदी।
⑦ भारत में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी